६. वीर-निर्वाण-काल

पूर्वोक्त प्रकारसे षट्खंडागमकी रचनाका समय वीरनिर्वाणके पश्चात् सातवीं शताब्दिके अन्तिम या आठवीं शताब्दिके प्रारम्भिक भागमें पडता है। अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि महावीर भगवानका निर्वाणकाल क्या है।

जैनियोंमें एक वीरनिर्वाण संवत् प्रचलित है जिसका इस समय २४६५ वां वर्ष चालू है। इसे लिखते समय मेरे सन्मुख 'जैनमित्र' का ता. १४ सितम्बर १९३९ का अंक प्रस्तुत है जिसपर वीर सं. २४६५ भादों सुदी १, दिया हुआ है। यह संवत् वीरनिर्वाण दिवस अर्थात् पूर्णिमान्त मास-गणनाके अनुसार कार्तिक कृष्ण पक्ष १४ के पश्चात् बदलता है। अत: आगामी नवम्बर ११ सन् १९३९ से निर्वाण संवत् २४६६ प्रारम्भ हो जायगा। इस समय विक्रम संवत् १९९६ प्रचलित है और यह चैत्र शुक्ल पक्षसे प्रारम्भ होता है। इसके अनुसार निर्वाण संवत् और विक्रम संवत् में २४६६-१९९६ = ४७० वर्ष का अन्तर है। दोनों संवतोंके प्रारम्भ मासमें भेद होनेसे कुछ मासोंमें यह अन्तर ४६९ वर्ष आता है जैसा कि वर्तमान में। अत: इस मान्यताके अनुसार महावीरका निर्वाण विक्रम संवत्से कुछ मास कम ४७० वर्ष पूर्व हुआ।

किन्तु विक्रम संवत्के प्रारम्भके सम्बन्धमें प्राचीन कालसे बहुत मतभेद चला आ रहा है जिसके कारण वीरनिर्वाण कालके सम्बन्धमें भी कुछ गडबडी और मतभेद उत्पन्न हो गया है। उदाहरणार्थ, जो नन्दिसंघ की प्राकृत पट्टावली ऊपर उद्घृत की गई है उसमें वीरनिर्वाणसे ४७० वर्ष पश्चात् विक्रमका जन्म हुआ, ऐसा कहा गया है, और चूंकि ४७० वर्षका ही अन्तर प्रचलित निर्वाण संवत् और विक्रम संवतमें पाया जाता है, इससे प्रतीत होता है कि विक्रम संवत् विक्रमके जन्मसे ही प्रारम्भ हो गया था। किन्तु मेरुतुंगकृत स्थविरावली १ (१ विक्कम-रज्जारंभा पुरओ सिरि-वीर-णिव्वु भणिया। सुन्न-मुणि-वेय-जुत्तो विक्कम-कालाउ (तपगच्छपट्टावली)) जिणकालो।।

(मेरुतुंग-स्थविराली) तपागच्छ पट्टावली, १ (१ तद्राज्यं तु श्रीवीरात् सप्तति-वर्ष-शत-चतुष्टये ४७० संजातम्। (तपगच्छपट्टावली)) जिनप्रभसूरिकृत पावापुरीकल्प २ (२ मह मुक्ख-गमणाओ पालय-नंद-चंदगुत्ताई-राईसु वोलीणेसु चउसयसत्तरेहिं वासेहिं विक्कमाइच्चो राया होही(जिनप्रभसूरि-पावापुरीकल्प)), प्रभाचन्द्रसूरिकृत प्रभावकचरित ३ (३ इतः श्रीविक्रमादित्यः शास्त्यवन्तीं नराधिपः। अनृणां पृथिवीं कुर्वन् प्रवर्तयति वत्सरम्।। (प्रभाचन्द्रसूरीप्रभावकचरित)) आदि ग्रंथोंमें उल्लेख हैं कि विक्रमसवत् का प्रारम्भ विक्रम राजाके राज्यकालसे या उससे भी कुछ पश्चात् प्रारम्भ हुआ।

श्रीयुत बैरिस्टर काशीप्रसादजी जायसवालने इसी मतको मान देकर निश्चित किया कि चूंकि जैन ग्रंथोंमें ४७० वर्ष पश्चात् विक्रमका जन्म हुआ कहा गया है और चूंकि विक्रमका राज्यारंभ उनकी १८ वर्षकी आयुमें होना पाया जाता है, अतः वीर निर्वाणका ठीक समय जाननेके लिये ४७० वर्षमें १८ वर्ष और जोडना चाहिये अर्थात् प्रचलित विक्रमसंवतसे ४८८ वर्षपूर्व महावीरका निर्वाण हूआ४। (४ **Bihar and Orissa Research Society Journal, 1915.)**

एक और तीसरा मत हेमचंद्राचार्य के उल्लेखपरसे प्रारम्भ हो गया है । हेमचन्द्रने अपने परिशिष्टपर्वमें कहा है कि महावीरकी मुक्ति से १५५ वर्ष जाने पर चन्द्रगुप्त राजा हुआ५। (५ एवं च महावीरमुक्तेर्वर्षशते गते। पंचपंचाशदधिके चन्द्रगुप्तोऽभवन्नृपः।। (परिशिष्ट-पर्व)) यहां उनका तात्पर्य स्पष्टतः चन्द्रगुप्त मौर्यसे है। और चूंकि चन्द्रगुप्तसे लगाकर विक्रमतक का काल सर्वत्र २५५ वर्ष पाया जाता है, अतः वीरनिर्वाणका समय विक्रमसे २५५ + १५५ = ४१० वर्षपूर्व ठहरा। इस मतके अनुसार ४७० मेंसे ६० वर्ष घटा देनेसे ठीक विक्रमपूर्व वीरनिर्वाणकाल ठहरता है। पाश्चिमिक विव्दानों, जैसे डॉ. याकोबी६। (६ **Sacred books of the East XXII**) डॉ. चार्पेटियर७। (७ **Indian Antiquary XLIII.**) आदिने इसी मत का प्रतिपादन किया है और इधर मुनि कल्याणविजयजीने८ (८ 'वीरनिर्वाण संवत् और जैनकालगणना,' संवत् १९८७.) भी इसी मतकी पुष्टि की है।

किन्तु दिगम्बरसम्प्रदायमें जो उल्लेख मिलते हैं वे इस उलझनको बहुत कुछ सुलझा देते हैं। इन उल्लेखोंके अनुसार शकसंवत्की उत्पत्ति वीरनिर्वाणसे कुछ मास अधिक ६०५ वर्ष पश्चात्

हुई १ (१ णिव्वाणे वीरजिणे छव्वास-सदेसु पंचवरिसेसु। पणमासेसु गदेसुं संजादो सगणिओ अहवा।। (तिलायपण्णत्ति) वर्षाणां षट्शर्ती त्यक्त्वा पंचाग्रां मासपंचकम्। मुक्तिं गते महावीरे शकराजस्ततोऽभवत् ।। (जिनसेन -हरिवंशपुराण) पणछस्सयवस्सं पणमासजुदं गमिय वीरणिव्वुइदो। सगराजो.....।।८५०।। (नेमिचन्द-त्रिलोकसार) एसो वीरजिणिंद-णिव्वाण-गद-दिवसादो जाव सगकालस्स आदी होदी । तावदिय-कालोकुदो ६०५-५, एदम्मि काले सग-णरिंद-कालम्मि-पक्खित्ते वध्दमाणजिण-णिव्वुदि-कालागमणादो। वृत्तं च--पंच य मासा पंच य वासा छच्चेव होंति वाससया। सगकालेण य सहिया भावेयव्वो तदो रासी ।।) तथा जो विक्रमसवंत् प्रचलित है और जिसका अन्तर वीरनिर्वाण कालसे ४७० वर्ष पडता है उसका प्रारम्भ विक्रमके जन्म या राज्यकालसे नहीं किन्तु विक्रमकी मृत्युसे हुआ था२। (छत्तीसे वरिस-सए विक्कमरायस्स मरण-पत्तस्स। सोरट्ठे वलहीए उप्पण्णो सेवडो संघो।।११।। पंच-सए छव्वीसे विक्कमरायस्स मरणपत्तस्स। दक्खिण-महुरा-जादो दाविडसंघो महामोहो ।।२८।। सत्तसए तेवण्णे विक्कमरायस्स मरणपत्तस्स। णंदियंडे वरगामे कट्ठो संघो मुणेयव्वो।।३८।। (देवसेन-दर्शनसार) सषट्त्रिंशे शतेऽब्दानां मृते विक्रमराजनि। सौराष्ट्रे वल्लभीपुर्यामभूत्तत्कथ्यते मया।। (वामदेव-भावसंग्रह) समारुढे पूत-त्रिदशवसतिं विक्रमनृपे। सहस्त्रे वर्षाणां प्रभवति हि पंचाशदधिके। समाप्तं पंचम्यामवती धरिणीं मुंजनृपतौ। सिते पक्षे पौषे बुधहितमिदं शास्त्रमनघम् ।। (अमितगति-सुभाषितरत्नसंदोह) मृते विक्रम-भूपाले सप्तविंशति-संयुते। दशपंचशतेऽब्दानामतीते श्रृणुतापरम्।।१५७।। (रत्ननन्दि-भद्रबाहुचरित)) ये उल्लेख उपर्युक्त उल्लेखोंकी अपेक्षा अधिक प्राचीन भी हैं। उससे पूर्व प्रचलित वीर और बुध्दके निर्वाणसंवत् मृत्युकालसेही सम्बध्द पाये जाते हैं।

इन उल्लेखोसे पूर्वोक्त उलझन इस प्रकार सुलझती है। प्रथम शकसंवत् को लीजिये। यह वीरनिर्वाणसे ६०५ वर्ष पश्चात् चला। प्रचलित विक्रम संवत् और शक संवत् में १३५ वर्ष का अन्तर पाया जाता है। अत: इस मतके अनुसार विक्रमसंवत् का प्रारम्भ वीरनिर्वाणसे ६०५ - १३५ = ४७० वर्ष पश्चात् हुआ । अब विक्रमसंवत् पर विचार कीजिये जो विक्रमकी मृत्युसे प्रारम्भ हुआ। मेरुतुंगाचार्यने विक्रमका राज्यकाल ६० वर्ष कहा है ३(विक्रमस्य राज्यं ६० वर्षाणि।(मेरुतुंग-विचारश्रेणी,पृष्ठ ३,जै. सा. संशोधक २)), अतएव ४७० वर्षमेंसे ये ६० वर्ष निकाल देनेसे विक्रम के राज्यका प्रारम्भ वीरनिर्वाणसे ४१० वर्ष पश्चात् सिध्द होता है। इस प्रकार हेमचन्द्रके उल्लेखानुसार जो वीरनिर्वाणसे ४१० वर्ष पश्चात् विक्रमका राज्य प्रारम्भ माना गया है वह ठीक बैठ जाता है, किंतु

उसे विक्रमसंवत्का प्रारम्भ नहीं समझना चाहिये। जिन मतोंमे विक्रमके राज्यसे पूर्व या जन्मसे पूर्व ४७० वर्ष बतलाये गये हैं उनमें विक्रमके जन्म, राज्यकाल व मृत्युके समयसे संवत्-प्रारंभके सम्बन्धमें लेखकोंकी भ्रान्ति ज्ञान होता है। भ्रान्तिका एक दुसरा भी कारण हुआ है। हेमचन्द्रने वीरनिर्वाणसे नन्द राजातक ६० वर्षका अन्तर बतलाया है और चन्द्रगुप्त मौर्य तक १५५ वर्षका। इस प्रकार नन्दोंका राज्यकाल ९५ वर्ष पडता है। किंतु अन्य लेखकोंने चन्द्रगुप्तके राज्यकाल तकके १५५ वर्षोंको नन्दवंशका ही काल मान लिया है और उससे पूर्व ६० वर्षोंको नन्दकाल तक भी कायम रखा हैं। इस प्रकार जो ६० वर्ष बढ गये उसे उन्होंने अन्तमें विक्रमकालमें घटाकर जन्म या राज्यकालसेही संवत्का प्रारम्भ मान लिया और इस प्रकार ४७० वर्षकी संख्या कायम रखी। इस मतका प्रतिपादन पं. जुगलकिशोरजी मुख्तारने किया है१ (अनेकान्त १ पृ. १४.स)

इस मतका बुध्दनिर्वाण व आचार्य-परम्पराकी गणना आदिसे कैसा सम्बन्ध बैठता है, यह पुन: विवादास्पद विषय है जिसका स्वतंत्रतासे विचार करना आवश्यक है । यहां पर तो प्रस्तुत प्रमाणों पर से यह मान लेनेमें आपत्ति नहीं कि वीर-निर्वाणसे ४७० वर्ष पश्चात् विक्रमकी मृत्युके साथ प्रचलित विक्रम संवत् प्रारम्भ हुआ । अत: प्रस्तुत षट्खंडागमका रचना काल विक्रम संवत् ६१४ - ४७० = १४४ शकसंवत् ६१४-६०५ = ९ तथा ईसवी सन् ६१४-५२७ = ८७ के पश्चात् पडता है ।